॥ श्री सूर्यादिनवग्रहदेवताभ्यो नमः ॥

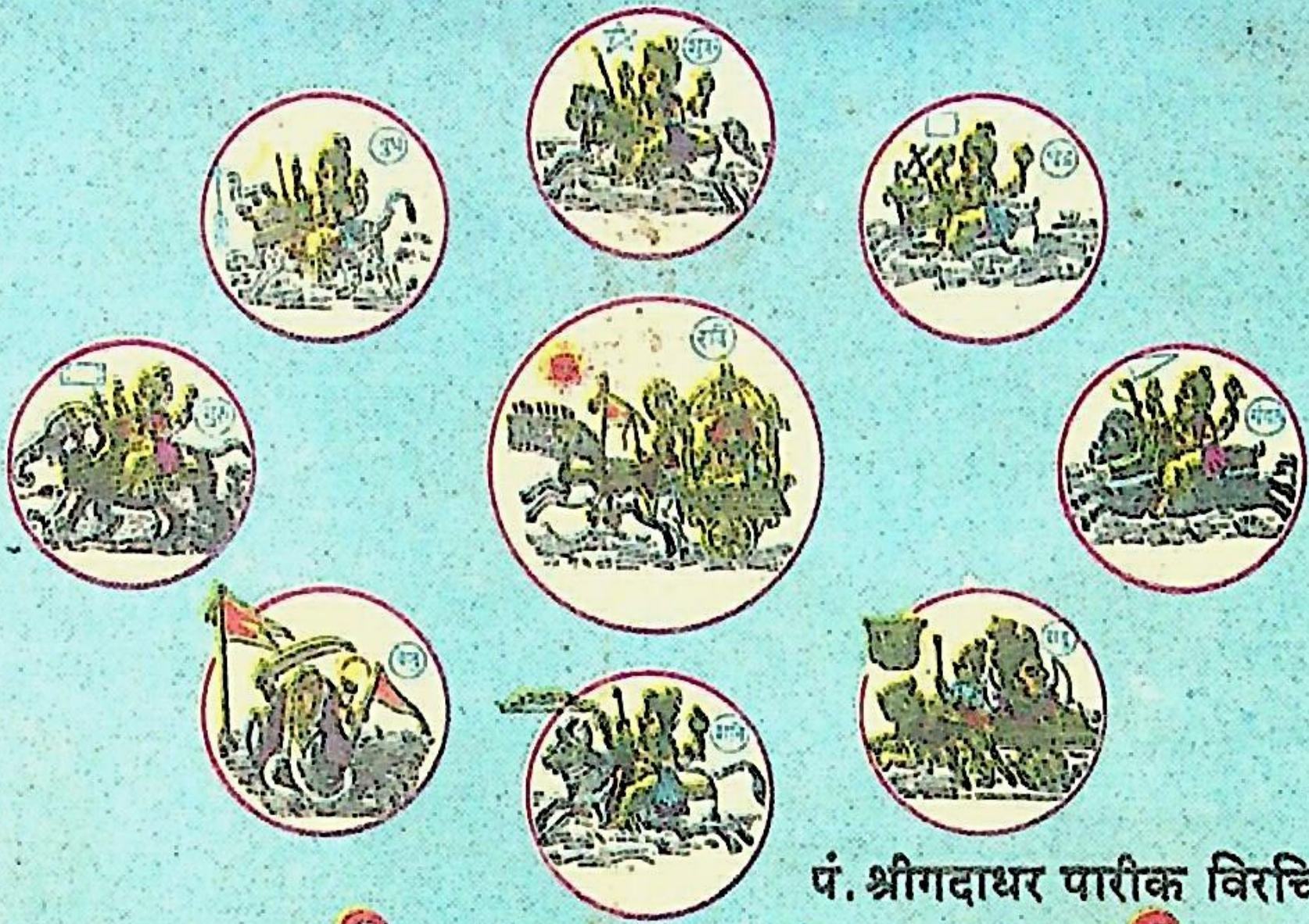

पं. श्रीगदाधर पारीक विरचित

श्री नवग्रह-चालीसा

संस्करण : अक्टूबर २००४, सम्वत् २०६१

मूल्य : ५ रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

॥ नवग्रहाः भवन्त्वेते प्रसन्नाः वरदाश्शुभाः ॥

दो शब्द

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

'श्रीमद्भागवत' पंचम स्कन्ध के अध्याय २२-२५ में भगवान श्रीमन्नारायण की शिशुमार आकृति का जो आकाशीय विराट् स्वरूप वर्णित है, उसमें नवग्रहों की अवतारणा का उल्लेख है। ''यत्पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे'' दर्शन सुविख्यात् सिद्धान्त है। आज नक्षत्र-भौतिकी (Astro Physics) के उच्च सिद्धान्तों

भाव भाषा-प्रवाह एवं सुललित पदावली में शास्त्रों का निचोड़ एवं सार संग्रह है। श्रीपारीकजी का यह सारस्वत प्रयास पाठकों के सतत पाठ से सदा सर्वदा सफल हो तदर्थ कोटिशः साधुवाद एवं शुभाशसायें हैं।

देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसकिन्नराः ।
पीड्यन्ते ग्रहपीडाभिः किं पुनर्भुवि मानवाः ॥

वर्ष प्रतिपदा
सम्वत् २०४६ वि०

शुभैषी-
विद्यावाचस्पति नन्दकुमार शास्त्री
भूतपूर्व प्राचार्य

लक्ष्मणगढ (सीकर) राजस्थान

॥ श्री सूर्यादिनवग्रहदेवताभ्यो नमः ॥

श्री नवग्रह-चालीसा

॥ दोहा ॥

सूर्य-राम, शशि-कृष्ण है, मंगल नरहरि रूप ।
बुध बौद्ध, वामन गुरु, भार्गव शुक्र स्वरूप ॥
श्री वराह राहु प्रबल, शनि कूर्म भगवान् ।
केतु मत्स्य अवतार है, नवग्रह देव महान् ॥

॥ चौपाई ॥

जय नवग्रह सर्वज्ञ सनातन ।
ग्रह रूपी भगवान जनार्दन ॥
जब जग पर अधिकार आपका ।
फल देते हो पुण्य-पाप का ॥

जय प्रारब्ध कर्म फलदाता ।
ग्रह स्वरूप भगवान विधाता ॥
ग्रहाधीन सब जगत बताये ।
ग्रह विशेष फल राज्य दिलाये ॥
काल नवग्रह के आधीना ।
धनपति और करे, धनहीना ॥

तीन लोक जिनका यश छाया।
काल चक्र नवग्रह की माया॥
ग्रह सुख सम्पति, सन्तति दाता।
जीवन के ग्रह भाग्य विधाता॥
आयु सुख आरोग्य प्रदाता।
दुःख दारिद्रय कष्ट के दाता॥

उत्पति स्थिति प्रलय के कारण।
ग्रह ब्रह्मा - शंकर - नारायण ॥
शुभ ग्रह सौम्य सदा सुखदाता।
क्रूर पाप ग्रह, दुःख प्रदाता ॥
देव स्वरूप नव ग्रह सारे।
आश्रित जन के संकट टारे ॥

जय श्री ग्रह मण्डल अधिनायक ।
सूर्यदेव भास्कर बल दायक ॥
मेष उच्च शुभ सुख फलदाता ।
सिंह राशि अधिपति विख्याता ॥
अन्धकार अज्ञान निवारक ।
ज्ञान और विज्ञान प्रकाशक ॥

जय श्री चन्द्रदेव सुखकारी ।
कर्क राशि, अधिपति तमहारी ॥
शिव मस्तक पर सदा सुशोभित ।
सुन्दरता पर विश्व विमोहित ॥
सौम्य शान्त, शुभ शीतल स्वामी ।
वृषभ उच्च जय, सोम नमामि ॥

तेज कान्ति विद्युत सम भारी।
जय मंगल ग्रह अति बलकारी ॥
धरणी सुत, ऋण, विनाश कर्ता।
उच्च राशि, मकर, दुःख हर्ता ॥
वृश्चिक, मेष, दशम शुभ मंगल।
दूर करे जग सदा अमंगल ॥

चन्द्रात्मज अति सौम्य स्वरूपा।
कन्या मिथुन राशि बुध भूपा ॥
कन्या स्थित बुध उच्च कहाये।
यश बुद्धि व्यापार बढाये ॥
अति सुन्दर प्रिय रूप तुम्हारा।
कष्ट दुःख बुध, हरो हमारा ॥

जय गुरुदेव बृहस्पति देवा ।
सुर नर मुनिजन करते सेवा ॥
धनुष मीन पति शुभफल दायक ।
कर्क उच्च नर भाग्य विधायक ।
जगद्गुरु ग्रह गुरु कहाये ।
करो कृपा जग शुभफल पाये ॥

सर्व शास्त्र के प्रखर प्रवक्ता ।
शुक्र कवि भार्गव विधि वक्ता ॥
असुर परम गुरु शुक्र नमामि ।
वृषभ तुला राशि के स्वामी ॥
विद्या बुद्धि निती धन दाता ।
उच्च मीन शुभ योग प्रदाता ॥

सूर्य पुत्र ग्रह महा भयङ्कर ।
यम अग्रज गति मन्द शनैश्चर ॥
मकर कुम्भ राशि अधिकारी ।
शनि देव जयकार तुम्हारी ॥
तुला उच्च शनि शुभफल देता ।
दुःख दैन्य पीड़ा हर लेता ॥

सूर्य-चन्द्र ग्रहण जब आता।
राहु ग्रह कारण कहलाता॥
राहु अशुभ और शुभ दाता।
महाबली दुःख कष्ट प्रदाता।
कारक मारक द्वय यह रूपा।
छाया ग्रह अति उग्र स्वरूपा॥

मस्तक हीन केतु ग्रह छाया।
राहु का अवशेष कहाया॥
शुभ अरू अशुभ केतु फल देता।
श्रेष्ठ कार्य फल यह हर लेता॥
राहु-केतु जग के दुःख हरना।
अनुकम्पा सब; जग पर करना॥

वेद नयन ज्योतिष, कहलाता।
कर्म भेद प्रारब्ध, बताता॥
नव ग्रह सब इसमें, फल दायक।
विद्या सम्पत्ति पुत्र प्रदायक॥
उच्च नीच सम शत्रु मित्र है।
ग्रह गति माया अति विचित्र है॥

पठन करें "नवग्रह चालीसा"।
सुख सम्पत्ति सुत-हो अवनीशा॥
भय बन्धन संकट कट जाये।
अनुकम्पा नवग्रह की पाये॥
यह पुरुषार्थ चतुष्टय दायक।
सदा सर्वदा विजय प्रदायक॥

॥ दोहा ॥

करें कृपा जग पर सदा, सूर्य चन्द्र बलवान ।
भौम बुध गुरु कवि शनि, राहु केतु महान ॥
महादशा, अन्तर दश. , ग्रह गौचर प्रतिकूल ।
पठन मात्र से वे सदा, होते हैं अनुकूल ॥
आयु बल आरोग्यता, सम्पत्ति जय समान ।
इनके पठने से बढ़े, मिटे व्याधि अज्ञान ॥
पूर्ण कृपा नव ग्रह करें, ग्रह शान्ति हो जाय ।
भक्त "गदाधर" प्रार्थना, नवग्रह करे सहाय ॥

॥ श्री सूर्यादि नवग्रह देवताभ्यो नमः ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.